Class - B.A - I (subsidiary)

Name of the Guest Teacher - Khushbu kumari
dept. of Pol. science, V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Lnmu

Topic - राजनीतिक दलों के कार्य -

(i) राजनीतिक दलों का सबसे प्रमुख कार्य लोकमत का निर्माण करना होता है राजनीतिक दल सार्वजनिक समस्याओं को जनता के सम्मुख इस रूप में प्रस्तुत करते हैं कि जनता उन्हें समझ सके और इस संबंध में निर्णय कर सके और लोकमत का निर्माण हो सके।

(ii) राजनीतिक दल चुनावों का संचालन करती है। राजनीतिक दल चुनाव के समय अपने चुनाव घोषणा-पत्र तैयार करते हैं, उसका प्रचार करते हैं, प्रत्याशियों को खड़ा करने तथा हर तरीके से चुनाव जीतने का प्रयत्न करते हैं।

(iii) निर्वाचन के बाद राजनीतिक दलों के द्वारा ही सरकार का निर्माण किया जाता है।

(iv) यदि निर्वाचन में किसी दल को बहुमत प्राप्त न हो तो वह प्रतिपक्ष के रूप में भूमिका निभाता है। ऐसे में वह शासन की प्रत्येक गतिविधियों पर नजर रखता है और उसकी कमजोरियों को जनता के सामने रखकर उसके विरुद्ध लोकमत तैयार करता है।

(v) राजनीतिक दल शासन तथा जनता के बीच मध्यस्थ का कार्य करते हैं। वे जनता की समस्याओं और आकांक्षाओं को सरकार के सामने रखते हैं और सरकार की स्थिति से जनता का अवगत कराते हैं।

(vi) सरकार के विभिन्न विभागों में समन्वय और सामंजस्य स्थापित भी राजनीतिक दल ही स्थापित करते हैं।

Scanned with CamScanner

(vii) अधिकांश राजनीतिक दल जनता के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को उन्नत करने का भी कार्य करते हैं।

दल प्रणाली के रूप -

(1) एकदलीय प्रणाली - यदि देश में केवल एक ही दल हो और शासन - शक्ति का प्रयोग करने वाले सभी सदस्य इस एक ही राजनीतिक दल के सदस्य हों, तो वहां की दल पद्धति को एक - दलीय कहा जाता है। चीन, क्यूबा आदि में एक-दलीय प्रणाली प्रचलित है।

(2) द्विदलीय प्रणाली - जब एक देश की राजनीति में केवल दो ही प्रमुख राजनीतिक दल होते हैं, तो उसे द्विदलीय प्रणाली कहते हैं। इंग्लैण्ड और अमेरिका में इस तरह की प्रणाली प्रचलित है।

(3) बहुदलीय प्रणाली - जब दो से अधिक दल राज-नीति में सक्रिय होते हैं वहां बहुदलीय प्रणाली होती है। यूरोप के अधिकांश राज्यों में, अफ्रीका तथा एशिया के नव स्वतंत्र देशों में बहुदलीय पद्धति है।

दल प्रणाली के लाभ या गुण -

(i) राजनीतिक दल राजनीतिक समस्याओं का पूरा-पूरा विवरण जनता के सामने रखकर लोकमत का निर्माण करते हैं।

(ii) कई राजनीतिक दल समाज-सुधार के बड़े-बड़े कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और लोकहितकारी और रचनात्मक कार्य करते हैं।

(iii) राजनीतिक दलों के अस्तित्व के कारण विधायिका

Teacher Signature

Scanned with CamScanner

में विरोधी दल भी रहता है, जो सरकार की गतिविधियों पर नियंत्रण रखता है।

(iv) राजनीतिक दल शासन के विभिन्न अंगों में सामंजस्य स्थापित करते हैं।

(v) राजनीतिक दल के प्रतिनिधि लोकतंत्र का मार्गप्रशस्त करके, विधानमंडल में बहुमत प्रदान करके शासन में स्थायित्व स्थापित करते हैं। सरकारी नीतियों का विरोध करके वे प्रतिनिधि शासन को परिमार्जित करते हैं।

दल प्रणाली के दोष -

(i) राजनीतिक दलों के कारण जनता में द्वेष एवं कटुता की भावना उत्पन्न होती है। वे लोगों में असत्य, भ्रष्टाचार, अवसरवादिता एवं अन्य बुराइयां फैलाते हैं।

(ii) राजनीतिक दल देश की जनता को दो या अधिक भागों में विभाजित करके राष्ट्रीय एकता को ठेस पहुँचाते हैं।

(iii) दलीय शासन-प्रणाली के अन्तर्गत केवल बहुमत प्राप्त दल के प्रभावशाली लोग ही मंत्री, आदि उच्च पदों पर आसीन किये जाते हैं। अच्छे नेता, जो विपक्ष में आ जाते हैं, उनकी सेवाएं शासन को रचनात्मक रूप में नहीं मिल पातीं।

(iv) दल पद्धति में विरोधी पक्ष उचित-अनुचित पर ध्यान दिये बिना सरकार के कार्य का विरोध करती है।

(v) दल पद्धति से समाज में भ्रष्टाचार फैलता है। निर्वाचन में अपने उम्मीदवारों को विजयी बनाने

Teacher Signature

Scanned with CamScanner

के लिए दल हर प्रकार के भ्रष्ट तरीकों का सहारा लेते हैं।

निष्कर्ष - राजनीतिक दल के अनेक दोष हैं लेकिन वास्तव में ये दोष मानवीय दुर्बलताओं और परिस्थितियों की अपूर्णताओं के ही प्रतिबिम्ब हैं। ऐसी स्थिति में हमारे द्वारा मानवीय चरित्र को उन्नत कर और परिस्थितियों को सुधार कर राजनीतिक दलों के दोषों को बहुत अधिक सीमा तक दूर किया जा सकता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी दोषों और कमियों के बावजूद राजनीतिक दल प्रजातंत्र के लिए अपरिहार्य हैं।

Scanned with CamScanner